

**International Double Blind Peer Reviewed, Refereed , Indexed , Multilingual-
Multidisciplinary-High Impact Factor-Monthly-Research Journal Related to
Higher Education For all Subject**

ISSN 0974-2832 (Print), E-ISSN- 2320-5474,RNI RAJBIL 2009/29954

SHODH, SAMIKSHA AUR MULYANKAN

MARCH , 2022

Vol-1, ISSUE-03



IMPACT FACTOR-6.115 (SJIF)

Editor in Chief

Dr. Krishan Bir Singh

www.ugcjournal.com

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

1

Editor's Office
A- 215, Moti Nagar,
Street No.7
Queens Road
Jaipur- 302021, Rajasthan,
India

E-Mail:
www.ugcjournal@gmail.com
professor.kbsingh@gmail.com

मुख्य सम्पादक – डॉ. कृष्णबीर सिंह का मानद पद कार्य पूर्णतः अवेतनिक है।
इस शोध पत्रिका के प्रकाशन, सम्पादन मुद्रण में पूर्णतः सावधानी बरती गई है। किसी भी प्रकार की त्रुटि महज मानवीय भूल मानी जाये।
शोध पत्र की समस्त जिम्मेदारी शोधपत्र लेखक की होगी। उक्त जर्नल में प्रकाशन हेतु भेजे गए पेपर सामग्री का सम्पूर्ण नैतिक दायित्व पेपर लेखक का होगा। मुख्य संपादक, प्रकाशक, मुद्रक, पिअर रिविज्यु मंडल जिम्मेदार नहीं होगा। लेखकों से अनुरोध है किसी भी प्रकार की साहित्यिक चोरी न करें।
समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर शहर ही होगा।

1. Editing of the research journal is processed without any remittance. **The selection and publication is done after recommendation of Peer Reviewed Team, Refereed and subject expert Team.**
 2. Thoughts, language vision and example in published research paper are entirely of author of research paper. It is not necessary that both editor and editorial board are satisfied by the research paper. **The responsibility of the matter of research paper is entirely of author.**
 3. Along with research paper it is compulsory to sent Membership form and copyright form. Both form can be downloaded from website i.e. **www.ugcjournal.com**
 4. In any Condition if any National/International university denies to accept the research paper published in the journal then it is not the responsibility of Editor, Publisher and Manangement.
 5. Before re-use of published research paper in any manner, it is compulsory to take written acceptance from Chief Editor unless it will be assumed as disobedience of copyright rules.
In case of plagiarism, the entire moral responsibility of the paper material will rest with the author only.
 6. **The entire moral responsibility of the paper material sent for publication in the said journal will be that of the paper author. Chief Editor, Publisher, Printer, Peer Review and Refereed Board will not be responsible.**
- Authors are requested not to do any kind of plagiarism**
7. All the legal undertaking related to this research journal are subjected to be hearable at jaipur jurisdiction only.

EDITORIAL BOARD

Patron

Prof. Kala Nath Shastri

(Rashtrapati Puraskar” For His Contribution To Sanskrit)

Prof. Dr. Alireza Heidari

Full Professor And Academic Tenure, USA

Chief Editor

Dr. Krishan Bir Singh

International Advisory Board

Aacid M. S. Ayoub

Geotechnical Environmental Engineering

Uqbah bin Muhammad Iqbal

Postgraduate Researcher

Badreldin Mohamed Ahmed Abdulrahman

Associate Professor

Dr. Alexander N. LUKIN

Principal Research Scientist & Executive Director

Dr. U. C. Shukla

Chief Librarian and Assistant Professor

Dr. Abd El-Aleem Saad Soliman Desoky

Professor Assistant

Prof. Ubaldo Comite

Lecturer

Moustafa Mohamed Sabry Bakry

Dr Sajid Mahmood

Shameemul Haque

Associate Chief Editor

Ravindrajeet Kaur Arora

S. Bal Murgan

Dr. Sandeep Nadkarni

Dr. A. Karnan

Dr. S.R. Boselin Prabhu

Deepika Vodnala

Dr. Kshitij Shinghal

Christo Ananth

Gopinath Palai

Dr. Neeta Gupta

Dr. Vinita Shukla

Harold Jan R. Terano

Dr Sajid Mahmood

Dr Pavan Mishra

Editor

Dr.H.B.Rathod

Dr. Dharamender Singh Chauhan,UOR,,Jaipur

Dr.Govind Nath Chaudhary-Sanskrit- Bhagalpur

Dr.Naveen Gautam

Dr. Mohini Mehrotra

Dr. Arvind Vikram Singh

Dr. Suresh Singh Rathore

Dr.Kishori Bhagat

Dr.Murari Lal Dayma

Kamalnayan. B. Parmar

Dr.Deepak Sharma

Dr.Sanjay B Gore

Dr. A.karnan

Dr.Amita Verma

Dr . Ity Patni

Dr. Somya Choubey

Dr.Surinder Singh

Dr. Manoj S. Shekhawat,

Dr. Anshul Sharma

Dr. Ramesh Kumar Tandan

S N Joshi

Dr. Sant Ram Vaish

Bindu Chauhan

Dr. Vinod Sen

Dr. Sushila Kumari

Dr Indrani Singh Rai

Dr Abhishek Tiwari

Prof.S.K.Meena

Prof.Praveen Goswami

G Raghavendra Prasad

Dr. Dnyaneshwar Jadhav
Akshey Bhargava
Dr. A. Dinesh Kumar
Dr. Pintu Kumar Maji
Dr Hanan Elzeblawy Hassan
Sandeep Kumar Kar
Dr.R.devi Priya
Dr.P.Thirunavukarasu
Dr. Srijit Biswas
Parul Agarwal
Dr. Preeti Patel
Archana More
Dr. Harish N
Dr. Seema Singh
Dr. Ram Singh Bhati
Dr. Pankaj Gupta
Dr Arvind Sharma
Dr. Ramesh Chandra Pathak

Dr. Ankush Gautam

Dr Markandey Dixit
Dr. Manoj Kumar
Ratko Pavlovi, Phd
Dr.S.Mohan
Dr Ramachandra C G
Dr.Sivakumar Somasundaram
Dr. Sanjeev Kumar
Dr. Padma S Rao
Dr Munish Singh Rana
Dr. Piyush Mani Maurya

Associate Editor

Dr. Yudhvir Redhu
Dr.Kiran B.R
Dr Richard Remedios
Dr. R Arul
Anand Nayyar
Dr . Ekhlaque Ahmad
Dr. Snehangsu Sinha
Dr Niraj Kumar Singh
Sandeep Kataria
Dr Abhishek Shukla

Somesh Kumar Dewangan
Amarendra Kumar Srivastav
Dr K Jayalakshmi
Dilip Kumar Jha

Assistant Editor

Jasvir Singh
Dr.pintu Kumar Maji
Dr. Soumya Mukherjee
Prof Ajay Gadicha
Ashutosh Tiwari
Gyanendra Pratap Singh
Jitendra Singh Goyal
Ashish Jaiswal
Hiten Barman
Dr. Priti Bala Sharma

Subject Expert

Dr. Jitendra Aroliya
Dr. Suresh Singh Rathore
Dr.kishori Bhagat
Dr Mrs Vini Sharma
Ranjan Sarkar
Chiranji Lal Parihar
Dr. Lalit Kumar Sharma
Dr Amit Kumar
Santosh Kumar Jha
Dr . Ekhlaque Ahmad
Naveen Kumar Kakumanu
Dr. Chitra Tanwar
Jyotir Moy Chatterjee
Somesh Kumar Dewangan
Raffi Mohammed
Dr. Sunita Arya
Dr. Ram Singh Bhati
Dr. Janak Singh Meena
Dr. Neha Kalyani

Dr. Rajeev Nayan Singh
Dr. Pankaj Rathore
Dr. Mahendra Parihar
Pradip Kumar Mukhopadhyay
Dr Vijay Gaikwad

Research Paper Reviewer

Dr. BH Kirdak
Amit Tiwari
Dr Dheeraj Negi
Dr. Meeta Shukla

Dr. Ranjana Rawat
Sonia Rathi
Dr. Anand Kumar
Dr. Pardeep Sharma
Anil Kumar
Dr. Deepa Dattatray Kuchekar
Dr Ade Santosh Ramchandra

Guest Editor

Dr. Lalit Kumar Sharma
Dr. Falguni S. Vansia

Chief Advisory Board

Ashok Kumar Nagarajan

Advisory Board

Dr. Naveen Kumar
Manoj Singh Shekhawat
Pranit Maruti Patil
Vishnu Narayan Mishra

भारत में निजीकरण एवं वर्तमान नीतियां



डॉ अशोक कुमार राकेशिया

सह-प्राध्यापक वाणिज्य शहीद भगतसिंह शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय पिपरिया, जिला-नर्मदापुरम म.प्र.

प्रस्तावना:-

प्राचीन काल में निजीकरण की नीति यूनान, रोमन सरकार, नाजी हुकूमत, इंग्लैंड आदि देशों में देखने को मिलती है। यहाँ सरकारी उपक्रमों को निजी हाथों में संचालित किया गया। भारत में यह निजीकरण विनिवेश एवं स्वामित्व के हस्तांतरण के रूप में परिभाषित किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से विकास आरंभ हुआ। प्रारंभ में देश के आधारभूत उद्योगों तथा महत्वपूर्ण भारी उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र में विकसित करने के लिए योजनाएं रखी गईं। देश की औद्योगिक नीति एवं व्यापारिक नीति, आंतरिक आवश्यकता को ध्यान में रखकर के सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का विकास किया गया।

साथ ही आर्थिक क्षेत्र के विकास हेतु पंचवर्षीय योजनाओं में मिश्रित अर्थव्यवस्था के अनुरूप निजी क्षेत्र के उद्योगों को भी प्रोत्साहन किया गया। अर्थव्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त बनाने के लिए बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। मुद्रा प्रवाह को अनुकूल बनाया गया। इन नीतियों के परिणाम स्वरूप आधारभूत संरचनात्मक विकास हुआ। इसके साथ-साथ भुगतान संतुलन, व्यापारिक घाटा एवं राजकोषीय घाटे की समस्या उत्पन्न हुई। विदेशों से कर्ज लेना पड़ा।

पेट्रोलियम भंडारों के लिए अधिक भुगतान करना पड़ा तथा पर्याप्त विदेशी मुद्रा की कमी होने के कारण विदेशी कर्ज का बोझ बढ़ता गया। सार्वजनिक क्षेत्र में सुस्त प्रबंधन का प्रभाव देखने को मिला, जिससे अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव दिखने लगा। परिणाम स्वरूप आर्थिक दोषों को दूर करने के लिए नई मौद्रिक नीति तथा कोष प्रवाह नीतियों में सुधार किया गया, किंतु स्थिति अधिक अच्छी नहीं रही। 1980 के दशक में इस प्रकार के प्रभाव को दूर करने के लिए विशेष प्रकार के

चिंतन किए गए। जिसमें 1991 में उदारवाद, निजीकरण एवं भूमंडलीकरण की नीतियां सामने आईं। जिसका प्रभाव भारत की औद्योगिक नीति, मौद्रिक नीति एवं व्यापारिक नीतियों पर पड़ा। निजीकरण के प्रभाव औद्योगिक संस्थानों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों के ऊपर भी देखने को मिलने लगा।

आशय- निजीकरण सरकारी उपक्रमों को निजी हाथों में सौंपे जाना तथा विनिवेश एवं स्वामित्व के हस्तांतरण की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है।

शोध के उद्देश्य:-

शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नानुसार हैं।

- 1 निजीकरण से संबंधित उपलब्ध साहित्य एवं योजनाओं का अध्ययन करना।
- 2 वर्तमान में संचालित निजीकरण योजनाओं का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव को जानना।
- 3 निजीकरण का उद्योगों के प्रबंध, प्रशासन एवं संचालन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निजीकरण की आवश्यकता:-

अर्थव्यवस्था में सुधार करने के लिये कुछ कदम उठाये जाना अवश्यक है। वे इस प्रकार हैं:-

- ◆ सार्वजनिक उद्यमों की संचालन क्षमता में सुधार।
- ◆ उद्योगों में प्रतिस्पर्धा एवं कुशलता का विकास।
- ◆ घाटे के बजट में संसाधनों का उपयोग।
- ◆ घरेलू उद्योगों का वैश्वीकरण।
- ◆ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को आमंत्रण।

- ◆ निर्यात प्रोत्साहन के माध्यम से विदेशी मुद्रा अर्जन ।
- ◆ प्राकृतिक संसाधनों का उचित विदोहन ।
- ◆ तेजी से औद्योगिक वातावरण तैयार करना एवं कल्याणकारी गतिविधियों का संचालन ।
- ◆ घाटे के उद्यमों में सुधार करना ।
- ◆ औद्योगिक शांति स्थापित करना ।

शोध कार्य का पुनर्वावलोकन:-

शोध आवश्यकताओं की पूर्ति एवं विश्वसनीयता हेतु इस क्षेत्र में पूर्व में किये गये शोध अध्ययनों का विवेचन किये जाने की आवश्यकता होती है। अतः इस विषय से संबंधित विषय पर श्रुति मिश्रा द्वारा positive impact of privatization on Indian economy, तथा ई. पेरेटी द्वारा Credible privatization आदि ने इससे संबंधित कार्य किये हैं।

शोध प्रविधि:-

शोध विचार को वास्तविक धरातल पर लाने के लिए एक ऐसी प्रक्रिया को अपनाया जाता है, जो उसके वास्तविक स्वरूप को लाने के लिए तथ्यात्मक रूप से एवं उसे निकटता प्रदान करने के लिए अपनायी जाती है। शोध प्रक्रिया भी एक ऐसी प्रक्रिया ही है। शोध अध्ययन के अंतर्गत उस शोध विषय की वास्तविकता को जानने के लिए विषय का गहन चिंतन और निर्धारित विकल्पों में से सही विकल्प चयन करना संभव होता है। विषय से संबंधित विभिन्न प्रकार के आँकड़ों का संग्रहण, सारणियन, श्रेणियन, विश्लेषण, निर्वचन तथा प्रदर्शन किया जाता है।

इस शोध अध्ययन के अंतर्गत हमने वर्तमान परिस्थिति में निजीकरण के संबंध में शासकीय आँकड़ों के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं सोशल मीडिया के माध्यम से प्राप्त जानकारी का उपयोग करते हुए स्थिति के वास्तविक करीब पहुंचने का प्रयास किया है। शासकीय योजनाओं एवं निजीकरण के संबंध में दी गई जानकारी का उपयोग करते हुए सार गर्भिता को पहचाना है तथा इससे उत्पन्न स्थितियों को निष्पक्ष रूप से तथ्यात्मक रूप से प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

निजीकरण की वर्तमान स्थिति:-

वर्तमान समय में केंद्र सरकार निजीकरण की ओर विशेष प्रकार से जोर दे रही हैं। सरकार ऐसे सार्वजनिक उद्योगों, कम्पनियों एवं सरकारी इकाइयों का निजीकरण करने

के लिए प्रतिबद्धता दर्शा रही है तथा विनिवेश एवं स्वामित्व हिस्सेदारी भी निजी हाथों में सौंपना चाहती है। इस संबंध में किये गये प्रयास निम्न हैं-

- ◆ वर्ष 1991-92 में सरकार ने विनिवेश द्वारा 2510 करोड़ रुपया जुटाने का लक्ष्य रखा था, जिसमें से लक्ष्य से अधिक 3040 करोड़ रुपया जुटाने में सफल रहे।
- ◆ वर्ष 2013-14 में लगभग 56000 करोड़ रुपए के विनिवेश का लक्ष्य रखा था पर यह उपलब्धि 26000 करोड़ रुपया की रही थी।
- ◆ सरकार ने 2017-18 में एक लाख करोड़ का लक्ष्य रखा था। जिसमें 85000 हजार करोड़ रुपया जुटाने में सफल रहे।
- ◆ वर्ष 2019-20 में सरकार द्वारा अंतरिम बजट के दौरान विनिवेश के जरिए 90 हजार करोड़ रुपया जुटाने का लक्ष्य रखा था, बाद में इसे बढ़ाकर 105000 करोड़ रुपये कर दिया, लेकिन इसी दौरान कोविड-19 आ जाने के कारण लक्ष्य प्राप्त करने की में असफल रही।
- ◆ वर्ष 21-22 में विनिवेश के लिए 175000 करोड़ रुपये का लक्ष्य रखा गया है।
- ◆ सरकार भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन लिमिटेड, एयर इंडिया शिपिंग कारपोरेशन ऑफ इंडिया, कंटेनर कारपोरेशन ऑफ इंडिया, आईडीबीआई बैंक, बीसीएमएल, पवन हंस, नीलांचल इस्पात निगम आदि को निजी करण के क्षेत्र में पहुंचाने वह सफल रही हैं। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने 1993 में 13 नए घरेलू बैंकों को बैंकिंग करने की।
- ◆ दूरसंचार क्षेत्र में 1991 से पहले तक बीएसएनएल का एकाधिकार था, 1999 में नई टेलीकॉम नीति लागू होने के बाद यह भी निजीकरण की ओर आगे बढ़ा।
- ◆ बीमा क्षेत्र में 1956 में लाइफ इश्योरेंस एक्ट के बाद 1 सितंबर 1956 को भारतीय जीवन बीमा निगम की स्थापना हुई थी 1999 में मेहरोत्रा समिति की सिफारिश के बाद निजी क्षेत्र को छोड़ दिया गया।
- ◆ एविएशन क्षेत्र में 1992 में सरकार ने ओपन स्काई नीति बनाई और मोदी लुप्त धमनिया एयरवेज, एयर सहारा जैसी कंपनियां मैदान में आई।
- ◆ 1991 तक दूरदर्शन ही था 1992 मेरा निजी चैनल जी टीवी शुरू हुआ आज देश में 1000 से ज्यादा चैनल कार्य कर रहे हैं।

सरकार ने निजी करण के संबंध में एक दीर्घकालीन नीति बनाई है इसके तहत सरकारी क्षेत्र से जुड़ी कंपनी, पीएसयू और अन्य संस्थानों को दो हिस्सों में बांटा गया है :-

- ◆ जिन कंपनियों में एवं पीएचयू का सरकार में 51 प्रतिशत हिस्सा बन चुकी है सरकार की योजनाएं अगले 3 साल में पूर्ण रूप से निजीकरण करने की है ।
- ◆ सरकार ने कुछ कंपनियां, पीएसयू और संस्थानों को रणनीति क्षेत्र में रखा है, जिसमें परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष, रक्षा, ट्रांसपोर्ट, ऊर्जा, वित्तीय सेवाएं आदि विभाग शामिल हैं, सरकार इस क्षेत्र को निजी करण और विनिवेश से फिलहाल दूर रखेगी ।
- ◆ सरकारी क्षेत्र की 300 कंपनीया पीएसयू एवं अन्य सरकारी उपकरणों को अधिकतम पूर्ण निजीकरण या इनका ज्यादा से ज्यादा हिस्सा बेचने के लिए तत्पर है सरकार की योजनाएं इन क्षेत्रों से जुड़ी सरकारी कंपनियों की संख्या 3 साल में 300 से 23 करने की है ।

निजीकरण की समस्याएँ:-

निजीकरण के आलोचक सार्वजनिक उपक्रमों की संपत्ति को औने पौने दामों में बेची जाने के कारण इस प्रक्रिया की आलोचना कर रहे हैं और कह रहे हैं कि इस प्रक्रिया से सरकार को बहुत बड़ा घाटा उठाना पड़ रहा है । विनिवेश से प्राप्त राशि का उपयोग उपकरणों के विकास के लिए नहीं किया जा रहा है, नाही समाज उपयोगी अधोसंरचना के निर्माण में खर्च किया जा रहा है । यह राशि केवल सरकार के बजट के राजस्व घाटे को कम करने के लिए उपयोग में लाई जा रहे हैं । जिसके कारण निजीकरण से उपलब्ध राशि का सही उपयोग न होने के कारण यह निजीकरण का कार्य भविष्य में नुकसान देगा एवं सार्वजनिक हित के विरुद्ध उपयोग होने के कारण इसके दूरगामी परिणाम देश की अर्थव्यवस्था पर अच्छे नहीं बढ़ने की संभावना जताई जा रही हैं । अन्य समस्याएँ निम्नानुसार हैं-

- ◆ अधिक मुनाफा एवं कम जोखिम चाहना,
- ◆ वस्तु एवं सेवा की लागत में वृद्धि करना,
- ◆ सामाजिक दायित्व नाममात्र होना,
- ◆ उत्पाद एवं सेवा में गरीब लोगों को ध्यान में न रखना,
- ◆ एकाधिकार की समस्या,
- ◆ भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलना,
- ◆ जनहित का अभाव एवं कारपोरेट को फायदा पहुंचाना,
- ◆ कर्मचारियों का शोषण,
- ◆ अर्ध बेरोजगारी को बढ़ावा,

समस्याओं के निदान हेतु लिए सुझाव:-

निजीकरण की समस्याओं से निदान पाने के लिये निम्न लिखित सुझाव प्रस्तुत हैं:-

- ◆ वस्तु एवं सेवा क्षेत्र में गुणवत्ता में सुधार,
- ◆ उत्पादन एवं सेवा को बढ़ावा,
- ◆ प्रतियोगिता में अधिक वृद्धि
- ◆ उत्पादन को बढ़ावा,
- ◆ भ्रष्टाचार में कमी,
- ◆ रोजगार की संभावनाओं को बढ़ावा मिलना,
- ◆ तकनीकी ज्ञान एवं आईटी का उपयोग संभव,
- ◆ उद्योग में भी निवेश को बढ़ावा देना,
- ◆ घाटे की अर्थव्यवस्था से मुक्ति मिलना,
- ◆ सामाजिक सरोकार के कामों में वृद्धि,
- ◆ सामाजिक उत्तरदायित्व में कमी,
- ◆ सरकारी राजस्व में वृद्धि होने की संभावना,
- ◆ व्यवसाय कुशलता में वृद्धि,
- ◆ सेवा क्षेत्र में गुणवत्ता में सुधार,
- ◆ प्रबंध एवं संचालन में सुधार

निष्कर्ष:-

भारत सरकार ने स्वतंत्रता के बाद से ही मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया एवं समाजवादी विचारधारा के अनुरूप देश के उद्योगों की आधारभूत संरचना सरकारी क्षेत्रों में की एवं देश के आधारभूत एवं भारी उद्योगों का विकास किया । साथ ही बहुत सारे क्षेत्रों में निजी पूंजी संसाधनों एवं स्वामित्व के आधार पर विकास किया । बढ़ती हुई देश की अर्थव्यवस्था एवं विदेशों पर निर्भरता का विकास भी हुआ । 1991 में निजीकरण, उदारवाद एवं भूमंडलीकरण के परिणाम स्वरूप देश के उद्योगों को निजीकरण के क्षेत्र में बढ़ावा देने की बात सामने आई । प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा दिया गया ।

बहुत सारे संसाधनों कंपनियां एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों में निजी निवेश को बढ़ावा मिला । जिसके कुछ परिणाम अच्छे देखने को मिले, लेकिन निजीकरण के आधार पर देश की अर्थव्यवस्था का विकास करना उचित नहीं माना जाएगा, क्योंकि बहुत सारे क्षेत्र ऐसे हैं, जहां पर शासकीय हस्तक्षेप एवं नियंत्रण की जरूरत है, निजीकरण के आधार पर जो धन प्राप्त होता है, वह जन कल्याण के लिए उपयोग नहीं होता है । जिसके कारण एक सीमित क्षेत्र में ही निजीकरण को प्रोत्साहित किया जाए, तो देश की अर्थव्यवस्था में स्थायित्व लाते हुए विकास की संभावनाएं बलवती होती हैं ।

संदर्भ सूची :-

- 1 <http://hi.m.wikipedia.Org>.
- 2 <http://m.economic.time.com>
- 3 <http://www.drishtiiias.com>
- 4 <http://egyankosh.ac.in>
- 5 www.aajtak.in
- 6 Acharya,Shankar.2002. Macroeconomic Management in the 1990”Economic and Political Weekly April20,2002.
- 7 Mishra,R.K.2014. Role of State-Owner in India’s Economic Development”.
- 8 Pettinger,T.2017 Advantages and Problems of Privatization”Economics 12 May.
- 9 Varrotil,U.2015 Corporate Governnacein State Owned Enterprises”Quarterly Briefing.NSE 9 April.